अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध (परीक्षा 24 जुलाई, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'जाइसु' शब्द का अर्थ है-

(क) जानने में (ख) देखने में

(ग) जातियों में (घ) जाने में ( )

(b) 'वोक्कसो' का अर्थ है-

(क) वर्णसंकर (ख) कर्कश

(ग) विशेष उत्कर्ष (घ) वक्र ( )

(c) 'आययंति' का अर्थ है -

(क) आते हैं (ख) जानते हैं

(ग) प्राप्त करते हैं (घ) चिंतन करते हैं ( )

(d) 'रोयमाणा' का अर्थ है -

(क) रोते हुए (ख) अभिरूचि रखते हुए

(ग) कुचलते हुए (घ) रौब जमाते हुए ( )

(e) 'विसीयइ' का अर्थ है-

(क) विशेष पाता है (ख) विषय जानता है

(ग) विशेष सिंचन करता है (घ) विषाद पाता है ( )

(f) 'मुहुं मुहुं' का अर्थ है -

(क) पृथक्-पृथक् (ख) जल्दी-जल्दी

(ग) बार-बार (घ) कभी-कभी ( )

(g) 'अभिजाए' शब्द का अर्थ होता है-

(क) अभिजात (ख) कुलीन

(ग) विनीत (घ) उपर्युक्त सभी ( )

(h) यथार्थ रूप से पदार्थों का निश्चय करने की रूचि को कहते हैं -

(क) सम्यक् ज्ञान (ख) सम्यक् दर्शन

(ग) सम्यक् चारित्र (घ) सम्यक् तप ( )

(i) चौथे गुणस्थान की उत्कृष्ट स्थिति है-

(क) अन्तर्मुहूर्त (ख) छह आवलिका

(ग) तेतीस सागरोपम (घ) तेतीस सागर झाझेरी ( )

(j) आठवें से बारहवें गुणस्थान तक क्षपक श्रेणि वाले में भाव पाए जाते हैं -

(क) 2 (ख) 3

(ग) 4 (घ) 5 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) पाप कर्म से उपार्जित धन त्राणदायक होता है यह मिथ्या मान्यता रूप प्रमाद मानव का अज्ञान है। ( )

(b) जीवों को इस जन्म में किए गए कर्मों-दुष्कर्मों का फल दूसरे जन्म में मिलता है। ( )

(c) साधना के लिए गुरु, संघ आदि समूह विघ्नकारक है, अकेले स्वतंत्र रहकर साधना करनी चाहिए 'एकान्त एवं भ्रान्त मान्यता है। ( )

(d) विग्गहं का अर्थ विशेष अनुग्रह होता है। ( )

(e) नय वस्तु के अनेक अंशों को ग्रहण करता है जबकि प्रमाण एक अंश को। ( )

(f) चक्षु और मन से व्यंजनावग्रह नहीं होता। ( )

(g) दूसरे गुणस्थान में 55 हेतु पाए जाते हैं। ( )

(h) पांचवें गुणस्थान में अठारह लाख योनियां पायी जाती हैं। ( )

(i) भगवती सूत्र में वर्णित प्रश्न ''लोक शाश्वत है या अशाश्वत'' गौतम स्वामी द्वारा भगवान महावीर से पूछा गया है। ( )

(j) प्रवचन सारोद्धार के अनुसार 'भविष्य में लगने वाले पापों से निवृत्त होने के लिए गुरुसाक्षी या आत्म-साक्षी से हेय वस्तु के त्याग को प्रत्याख्यान कहते हैं। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मेरे एक पेट तथा तीन पैर होते हैं। .....

(b) आयु अल्प होने से तथा मृत्यु का काल अनियमित होने से मुझे घोर कहा गया है।.....

(c) जीव धर्म में स्थिर हो जाने पर मेरे द्वारा सींची गयी अग्नि के समान परम निर्वाण को प्राप्त होता है। .....

(d) मनुष्य जन्म को पाकर भी मेरे प्रभाव से मनुष्य प्रथृक्-प्रथक् जातियों को प्राप्त करता है। .....

(e) मुझे ज्ञान-अज्ञान का निर्णायक माना जाता है। .....

(f) मैं जीव की क्रिया करने का साधन हूँ। .....

(g) मैं ऐसा चारित्र हूँ जो दसवें गुणस्थान में पाया जाता हूँ। .....

(h) मैं ऐसा कर्म हूँ जिसका उदय दसवें गुणस्थान से आगे नहीं होता। .....

(I) मैं उत्पाद, व्यय और घ्रोव्य से युक्त हूँ .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखिए **14x2 = (28)**

(a) संयम के पर्यायवाची बताइए।

.....

.....

(b) **निर्युक्तिकार ने चार अंगों सहित अन्य कतिपय अंगों को भी दुर्लभ बताया है, वे दुर्लभ अंग कौन-कौन से हैं?**

.....

.....

(c) **प्रमाद क्या है?**

.....

.....

(d) **धन से कहीं भी सुरक्षा नहीं है इसको समझाइए।**

.....

.....

(e) **साधना के प्रारम्भिक वर्षों में मुनि को अप्रमत्त होकर क्यों विचरना चाहिए?**

अथवा

अनुकूल विषयों के प्रति राग का त्याग क्यों करना चाहिए? समझाइए।

.....

.....

(f) **भाव निक्षेप किसे कहते हैं?**

अथवा

धारणा किसे कहते हैं?

.....

.....

(g) **शब्द नय किसे कहते हैं?**

.....

.....

(h) **लब्धि इन्द्रिय किसे कहते हैं?**

.....

.....

(i) **त्रिपुंज का अर्थ बताइए।**

.....

.....

(j) **वेदनीय कर्म के उदय से कितने परीषह होते हैं?**

.....

.....

(k) **पहले गुणस्थान में पायी जाने वाली आत्माओं के नाम लिखिए।**

.....

.....

(l) **तीसरे गुणस्थान में पाए जाने वाले योगों के नाम योग द्वार के आधार पर लिखिए।**

.....

.....

(m) **'जीव का सोना अच्छा या जागना' इसका भगवान महावीर ने क्या उत्तर दिया?**

.....

.....

(n) **दिवसचरिम पच्चक्खाण को समझाइए।**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **श्रद्धा की परम दुर्लभता के कोई तीन कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(b) देवता अपना आयुष्य क्षय कर मनुष्य योनि में उत्पन्न होते हैं, वहाँ वे कौनसे 10 अंगों से युक्त होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(c) सुईं च लद्धुं सद्दं च, वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणा वि, नो एणं पडिवज्जए।। उक्त गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वण्णवं।
अप्पायंके महापन्ने, अभिजाए जसो-बले।। उक्त गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) जे पावकम्मेहिं धणं मणुस्सा, समाययंती अमइं गहाय।
पहाय ते पास पयट्ठिए नरे, वेराणुवद्धा नरयं उवेंति।।

अथवा

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी, अप्पाणुरक्खी चरेऽप्पमत्तो।। उक्त गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेष।। सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **जीव भव्याभव्यत्वादीनि च। <u>अथवा</u> उपयोगः र्स्पशादिषु। सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **अप्रतिघाते। सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **दण्डक द्वार को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(j) **निमित्त <u>अथवा</u> समकित द्वार को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(k) **अनेकान्तवाद एवं स्यादवाद् में क्या अन्तर है?**

.....

.....

.....

.....

.....

(l) **स्याद्वाद की खूबियाँ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(m) **पच्चक्खाण में कौनसे तीन प्रकार के दोष लगने की संभावना रहती है? संक्षिप्त में समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

.....

(n) **पच्चक्खाण क्यों करने चाहिए?**

.....

.....

.....

.....

.....